रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर

भारतीयता को आगे रखकर बनाई गयी है नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति–कुलपति प्रो. मिश्र

हिन्दी एवं भाषा विज्ञान विभाग द्वारा राष्ट्रीय वेबिनार का आयोजन

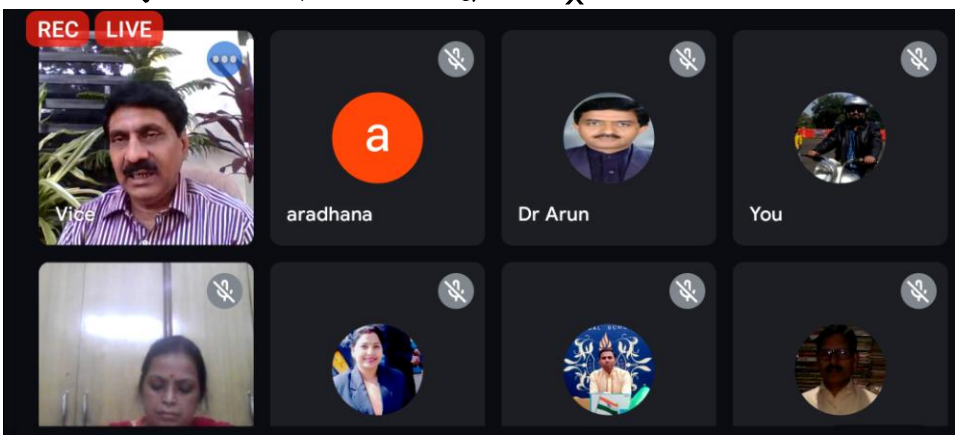

जबलपुर 31 अगस्त। नई शिक्षा नीति की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसमें कला, संस्कृति और भाषा के माध्यम से मनुष्य की सृजनात्मक क्षमता को जागृत करने पर बल दिया गया है। इसमें भारतीय भाषाओं, कला और संस्कृति के संवर्धन के संबंध में पूरा खाका पेश किया गया है। इसके अध्ययन से यह साफ हो जाता है कि भारतीयता को आगे रखकर यह शिक्षा नीति बनी है, जिसमें भाषा की शिक्षा पर बल दिया गया है। शिक्षा नीति की सिफारिशों को स्वीकार करने और बहुभाषी शिक्षा के लिए धन और संसाधन उपलब्ध कराना, ये ऐसी बातें हैं जिससे बच्चों के सीखने के नतीजों पर सबसे अधिक असर पड़ेगा। ये विचार माननीय कुलपति प्रो. कपिल देव मिश्र ने मंगलवार को आयोजित राष्ट्रीय वेबिनार की अध्यक्षता करते हुए व्यक्त किये।

रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय के हिन्दी एवं भाषा विज्ञान विभाग द्वारा 'नई शिक्षा नीति एवं हिन्दी भाषा' विषय पर राष्ट्रीय वेबिनार के प्रारंभ में विषय प्रर्वतन करते हुए संयोजक एवं विभागाध्यक्ष प्रो. धीरेन्द्र पाठक ने बताया कि नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति के त्रिभाषा सूत्र को भाषा–नीति और अनुवाद–नीति के साथ–साथ भाषा प्रौद्योगिकी की दृष्टि से भी देखने की जरूरत है। शिक्षण, शोध, अनुसंधान, काम–काज और संप्रेषण की भाषा के विकल्प के रूप में हिंदी को मजबूत करने का कार्य भाषा–प्रौद्योगिकी के द्वारा होगा। उल्लेखनीय है कि वर्तमान नीति, भाषा के साथ कला की बात कर रही है। इसमें भाषा के द्वारा कला और सांस्कृतिक संवर्धन का लक्ष्य है।

सृजनात्मक क्षमता को जागृत करने पर जोर–

मुख्य अतिथि के रूप में माननीय प्रो. नीरजा ए. गुप्ता, कुलपति सांची यूनिवर्सिटी ऑफ बौद्ध–इंडिक स्टडीज, सांची ने बताया कि नई शिक्षा नीति की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि

इसमें कला, संस्कृति और भाषा के माध्यम से मनुष्य की सृजनात्मक क्षमता को जागृत करने पर बल दिया गया है। इसमें सभी शास्त्रीय भाषाओं के संस्थानों और विश्वविद्यालयों का विस्तार करने, पांडुलिपि संरक्षण, अनुवाद एवं अध्ययन को मजबूत बनाने के प्रयास की जरूरत पर भी बल दिया गया है। वेबिनार में विशिष्ट अतिथि डॉ. संदीप अवस्थी,अध्यक्ष राष्ट्रीय विद्या अध्ययन केंद्र अजमेर, राजस्थान ने कहा कि शिक्षा नीति की सिफारिशों के क्रियान्वयन हेतु सबसे जरूरी है शिक्षकों को सही तरीके से प्रशिक्षित करने और नियुक्ति करना। बहुभाषी शिक्षा के लिए धन और संसाधन उपलब्ध कराना। ये ऐसी बातें हैं जिससे विद्यार्थियों के सीखने के नतीजों पर सबसे अधिक असर पड़ेगा।

भाषा की शिक्षा पर भी पूरा ध्यान–

वेबिनार में विशिष्ट अतिथि प्रो. अरुण शुक्ल शास. स्वशासी महाकोशल कॉलेज कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, जबलपुर ने बताया कि इस शिक्षा नीति में पहली बार शिक्षा में भाषा तथा भाषा की शिक्षा पर पूरा ध्यान दिया गया है। भाषा को शिक्षा में मूल्य बोध, दृष्टिकोण और सृजनात्मक कल्पना के निद्दमति का साधन भी माना गया है। नई शिक्षा नीति में इस बात पर जोर दिया गया है कि मौलिक विचार अपनी मातृभाषा में ही आते हैं, इसलिए उच्च शिक्षा और अनुसंधान के लिए भी मातृभाषा का ही प्रयोग होना चाहिए। गूगल मीट के माध्यम से आयोजित राष्ट्रीय वेबिनार का संचालन, आयोजन सहसंयोजक श्रीमती राखी चतुर्वेदी ने किया। अतिथि परिचय डॉ. नीलम दुबे एवं आभार प्रदर्शन डॉ. विपुला सिंह ने किया। इस अवसर पर प्रो. अलकेश चतुर्वेदी कुलसचिव सांची यूनिवर्सिटी ऑफ बौद्ध–इंडिक स्टडीज, डॉ. आशा रानी, प्रो. स्मृति शुक्ला, डॉ. लक्ष्मी पाण्डेय, सागर, डॉ. बारेलाल जैन, रीवा सहित देश के कोने–कोने से विद्वतजन मौजूद रहे।